मरम्मत किए हुए गुर्दे

ऐसे गुर्दों का उपयोग संभव है जिनका कैंसर निकाल दिया गया है। मगर उनमें दोबारा कैंसर होने का खतरा बना रहेगा।

गुर्दा प्रत्यारोपण के लिए लंबा इंतज़ार करना पड़ता है। हो सकता है कि जब तक व्यक्ति का नंबर आए तब तक उसकी मृत्यु हो चुकी हो। दूसरा तरीका है ऐसे गुर्दों का उपयोग जिनकी कुछ मरम्मत की गई हो। जापान के 2 सर्जनों ने एक व्यक्ति के गुर्दे (जो कैंसर या ऐसे ही किसी अन्य कारण से खराब हो गया था) की मरम्मत कर उसका प्रत्यारोपण दूसरे व्यक्ति में किया।

सन 1991 से जापान के उवाजिमा तोकूशुकाई अस्पताल के माकोतो मनामी और उनकी टीम ने औसतन पचास साल की उम्र के 42 रोगियों में मरम्मत किए गुर्दों का प्रत्यारोपण किया। पांच साल बाद उन्होंने पाया कि उन रोगियों में से 79 प्रतिशत स्वस्थ्य जीवन बिता रहे हैं।

दूसरी ओर, ऑस्ट्रेलिया के ब्रिस्बेन स्थित प्रिंसेस अलेक्ज़ेंडर अस्पताल के डेविड निकोल और उनकी टीम ने 49 रोगियों में मरम्मत किए गुर्दों का प्रत्यारोपण किया। यह पाया गया कि उनमें से कई तीन साल से कुछ अधिक समय तक स्वस्थ रहे। लेकिन इनमें से 4 की मृत्यु अन्य कारणों से हो गई।

इस प्रकार का प्रत्यारोपण हमेशा से ही विवादास्पद रहा है। परेशानी का एक कारण यह है कि जिनमें ये मरम्मत किए गुर्दे प्रत्यारोपित किए जा रहे हैं उनमें दोबारा कैंसर होने का खतरा बना रहेगा। इस कारण से ही जापान के एक रोगी की मृत्यु हुई। ऑस्ट्रेलिया में भी एक रोगी की प्रत्यारोपण के नौ साल बाद मृत्यु हो गई। इन दोनों रोगियों की मृत्यु दोबारा कैंसर के कारण हुई थी।

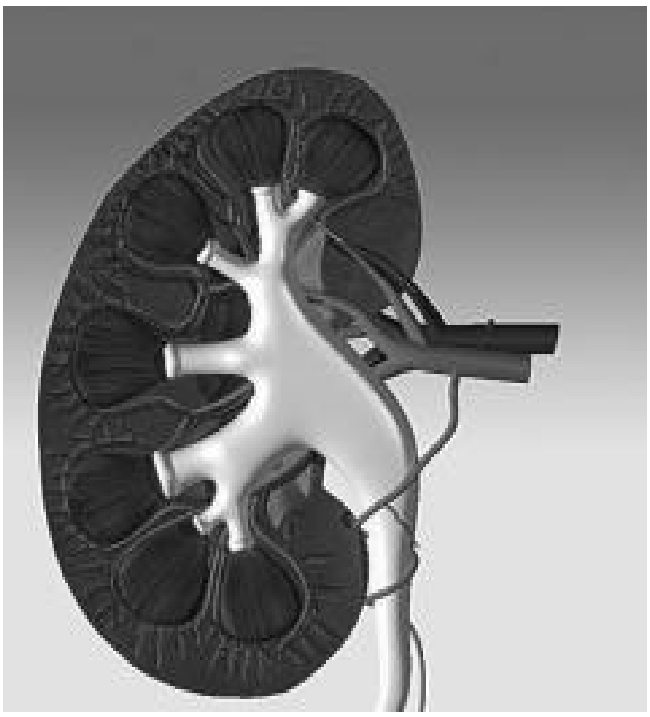

एक मुद्दा यह भी है कि गुर्दे में से कैंसर को पूरी तरह से हटा देने के बावजूद भी यह ट्यूमर ग्रहणकर्ता के स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकता है। एक और अध्ययन बताता है कि कैंसर निकलने के बाद भी ग्रहणकर्ता को गुर्दे का कोई जीर्ण रोग होने का खतरा बना रहता है। ऑस्ट्रेलिया में इस बात का ख्याल रखते हुए ही दानदाता और ग्रहणकर्ता दोनों का इलाज करने वाली मेडिकल टीमों को अलग-अलग रखा जाता है ताकि आंकड़ों में हेराफेरी की गुंजाइश न रहे। लेकिन जापान के मानामी दोनों का इलाज करते हैं।

एक मुद्दा यह है कि कितना बड़ा कैंसर होने के बावजूद किसी व्यक्ति के गुर्दे का उपयोग प्रत्यारोपण के लिए किया जा सकता है। यदि कैंसर छोटा है तो यह भी सोचना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति का गुर्दा निकाला ही क्यों जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***